Volume: 4 Issue: 8 Pages: 49-51

कछवाहा वंश के आदि पुरखा राव शेखा एवं शिखरगढ़ निर्माण

*[1] हेमन्त सिंह

*[1] शोध छात्र, इतिहास विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 18/July/2025
Accepted: 17/Aug/2025

***Corresponding Author**
हेमन्त सिंह
शोध छात्र, इतिहास विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश:
राव शेखाजी कछवाहा वंश में पैदा हुऐ। राव शेखा का जन्म नाण के शासक मोकल कछवाहा की राणी निरवाण से औज सुदी विजयादशमी, वि.सं. 1490 तदनुसार 24 सितम्बर, 1433 को हुआ था। पिता का स्वर्गवास होने के उपरान्त राव शेखाजी वि.स. 1502 में बरवाड़ा एवं नाण के 24 गांवों की जागीर के उत्तराधिकारी बने। उन्होंने अपने पुरुषार्थ के बल पर पैत्रिक राज्य आमेर के बराबर 360 गांवों पर अधिकार कर एक नए स्वतंत्र कछवाहा राज्य की स्थापना की तथा शेखावाटी साम्राज्य की नींव रखी। राव शेखाजी को अपने बल, वैभव और राज्य विस्तार के अनुरूप ही राजधानी की आवश्यकता थी। नाण छोटी जगह थी, इसलिए नाण से कुछ दूर ही उन्होंने अपने गढ़ की नींव रखी और बस्ती बसाना प्रारम्भ किया। शेखाजी ने इसे वि.सं. 1517 में अपनी राजधानी बनाया और इसका नाम 'अमरसर' रखा। अमरसर की यह भूमि अपने उत्कर्ष काल में युद्धों और शाकों की भूमि रही है। अमरसर बसाने के बाद शेखाजी ने पहाड़ों से सुरक्षित एक सुदृढ़ दुर्ग बनाने का निश्चय किया। अमरसर से पूर्व में कुछ मील दूरी पर जगदीश पर्वतमाला के पश्चिम ढ़ाल की उपत्यका को उन्होंने इसके लिए चुना। वह स्थान तीन तरफ से पहाड़ी चोटियों की प्राकृतिक प्राचीर से घिरा हुआ था। घाटी का एक पश्चिम भाग केवल खुला हुआ था। शेखाजी ने उस खुले भाग को विशाल ऊंची दिवार बनवाकर बन्द करवाया तथा उसमें प्रवेश के लिए एक मजबूत विशाल दरवाजा लगवाया। उस प्राकुतिक दूर्ग का नाम उन्होंने 'शिखरगढ़' रखा।

मुख्ये शब्दः कछावा, साम्राज्य, उपत्यका, प्राचीर, शाकों, घाटी, पराक्रमी, दूरदर्शी,उत्तराधिकारी, सामरिक, छापामार आदि ।

प्रस्तावना:

राव शेखाजी आमेर राज्य के कछवाहा नरेश उदयकरणजी के तीसरे पुत्र राव बालाजी के पौत्र और मोकलजी के पुत्र थे। राव उदयकरणजी ने अपने पुत्र राव बालाजी को 12 गांवों सहित बरवाड़ा की जागीर दी थी। बरवाड़ सामोद के पास स्थित है। राव शेखाजी वीर यौद्धा, पराक्रमी, दूरदर्शी, हिन्दू - मुस्लिम एकता के प्रतीक होने के साथ ही कुशल संगठक, अद्वितीय रणनीतिज्ञ और आदर्श क्षत्रिय गुणों से ओत-प्रोत थे।

राव शेखाजी कछवाहा वंश में पैदा हुऐ। कछवाहा क्षत्रिय सूर्यवंशी हैं। कछवाहा राजपूतों के प्राचीन 36 राजवंशों में से एक हैं। भगवान रामचन्द्रजी के पुत्र कुश के वंशज होने से ये कुशवाहा या कछवाहा कहलाये। ग्वालियर और दुबकुण्ड पर शासन करने वाली इस जाति के वंशज ही राजस्थान में आये और दौसा तथा आमेर क्षेत्र में अधिकार कर यहां के शासक बन गये, उन्हीं के वंशज कछवाहा या कछावा कहलाने लगे।' विद्धानों का यह भी मानना है कि कुश के बाद की पीढियों में होने वाले राजा सुमित के पुत्र कुर्म से उसके वंशज कुर्म कहलाये।

शेखाजी ने 16 वर्ष की अल्पआयु में समर्थ होकर राज्य का पद भार सम्भाला। युवा शेखाजी ने साम्राज्य विस्तार के लिए आस-पास के क्षेत्रों पर विजय के लिए अभियान चलाया। जल्द ही शेखाजी ने सांखलों, टांकों, यादवों आदि पर अपना अधिकार कर लिया। अपनी स्वतंत्रता के लिए शेखाजी ने आमेर नरेश राजा चन्द्रसेन से जो शेखाजी से अधिक शक्तिशाली थे, छः बार युद्ध किया और अन्तिम विजय शेखाजी की ही हुई। अन्तिम युद्ध में चन्द्रसेन ने समझौता कर राव शेखा को स्वतंत्र शासक मान लिया। शेखाजी ने अमरसर नगर बसाया, नाण का किला, शिखरगढ़, अमरगढ़, जगन्नाथजी का मन्दिर, आदि का निर्माण करवाया, जो आज भी उस वीर पुरुष की याद दिलाते हैं।

राव शेखाजी को अपने बल, वैभव और राज्य विस्तार के अनुरूप ही राजधानी की आवश्यकता थी। नाण छोटी जगह थी, इसलिए नाण से कुछ दूर ही उन्होंने अपने गढ़ की नींव रखी और बस्ती बसाना प्रारम्भ किया । नाण के आस-पास की भूमि दुर्गम प्राकृतिक बनावट के कारण शत्रु आक्रमणों से सुरक्षित और अजेय मानी जाती थी। सुरक्षा,

बचाव, छापामार युद्ध और सामरिक दृष्टि से यह स्थान शेखाजी को उपयुक्त लगा। इसलिए शेखाजी ने इसे वि.सं. 1517 में अपनी राजधानी बनाया और इसका नाम 'अमरसर' रखा।

अमरसर- अमरसर शेखावतों के आदि पुरखा राव शेखाजी की जन्म भूमि है। अमरसर की यह पावन धरा शेखावतों के लिए पितृ भूमि, पुण्य भूमि एवं प्रेरणा भूमि है। 15 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में 'नाण' नामक छोटे से गांव पर डाहलिये राजपूतों का शासन था। आमेर के शासक राजा उदयकर्ण के पौत्र और बरवाड़ा के शासक राव मोकलजी ने डाहलियों को परास्त करके नाण पर अधिकार किया था। मोकलजी के प्रतापी पुत्र राव शेखाजी ने अपने राज्य प्रसार के समय नाण के उत्तरी भाग में फैले खण्डहरों एवं नदी-नालों युक्त स्थान पर वि.स. 1517 में अपनी राजधानी की नींव डाली। शेखाजी ने अपनी राजधानी का नाम 'अमरसर' रखा ।

अमरसर के ऐतिहासिक स्थल

अमरसर से 15 कि.मी पूर्व में जगदीश पर्वत स्थित है। इस पर्वत को साल्हे या साल्ह नाम से भी जाना जाता है। अमरसर से पूर्व में इस पर्वत तक फैली समस्त भूमि नदी-नालों तथा प्राकृतिक जंगल से आच्छादित है । पर्वत के सर्वोच्च शिखर पर जगदीश का प्राचीन मन्दिर है, जहां पर प्रतिवर्ष भाद्रपक्ष मास में मेला भरता है। यह मन्दिर 8-9 वीं शताब्दी में गुर्जर प्रतिहारों के समय का बना हुआ है। गुर्जर जाति के लोग मन्दिर के पुजारी होते हैं।

घोड़ा खुर्रा- जगदीश पर्वत के पश्चिम ढ़ाल में शिखरगढ़ से लगभग 12 कि.मी दक्षिण दिशा में 'घोड़ा खुर्रा' नामक स्थान है। राव मोकलजी ने अपने घोड़ों को रखने के लिए यहां अस्तबल बनवाये थे, जिनके खण्डहर आज भी विद्यमान हैं।

त्रिवेणी - जगदीश पर्वत का पूर्वी ढ़ाल त्रिवेणी नदी का उद्गम स्थल है। पर्वत के पूर्वी ढ़ाल से तीन जलधाराऐं प्रवाहित हाने के कारण इसे त्रिवेणी कहा गया है। ये तीनों जलधाराऐं साबी नदी का प्रारम्भिक रुप है। आगे चलकर यही जलधारा बाणगंगा के नाम से जानी जाती है। यहां अनेक मन्दिर बने हुए हैं।

अमरसर गढ़- अमरसर गढ़ अमरसर कस्बे से पूर्व में स्थित है। इसका निर्माण राव शेखाजी द्वारा करवाया गया था। इसका प्रवेश द्वार पश्चिम दिशा में है। गढ़ में प्रवेश करते ही उत्तर दिशा में पुरानी शैली के मर्दाना एवं जनाना मकान बने हुऐ हैं। गढ़ के अन्दर घोड़े एवं ऊंट बांधने के लिए खुला स्थान है। प्रजा के पीने योग्य पानी के लिए गढ़ के अन्दर पूर्व दिशा में एक प्राचीन कुआ बना हुआ है।

कल्याणजी का मन्दिर - गढ़ के प्रवेश द्वार के बाहर पश्चिम दिशा में कल्याणजी का मन्दिर बना हुआ है। इस मन्दिर का निर्माण शेखाजी की टांक राणी द्वारा वि.स. 1517 में
करवाया गया था।

लक्ष्मीनाथजी का मन्दिर- लक्ष्मीनाथजी का प्राचीन मन्दिर नाण गांव में स्थित है। मन्दिर
का निर्माण वि.स. 1111 में किया गया था । वि.स. 1611 में इसमें ठाकुरजी की नयी प्रतिमा स्थापित की गई थी । मन्दिर के बाहर वि.स. 1205 की घुड़सवार तथा सती की आकृति
उत्कीर्ण देवली रखी हुई है।

शासन प्रबन्धन- शेखाजी ने अपनी सेना का मुख्यालय अमरसर को बनाया था। इसके अतिरिक्त 1200 घुड़सवारों की सेना मिलकपुर, 300 घुड़सवार बरवाड़ा, एवं 500 घुड़सवारों की सेना गढ़टकणेत में थी। सैन्य प्रबन्ध उनके पुत्रों एवं पठान सैनिकों द्वारा किया जाता था। उनकी सैना में मीणा जाति का दस्ता भी था। इस प्रकार शेखाजी के राज्य में प्रजा सुखी एवं समृद्ध थी तथा परस्पर सहयोग से जीवन यापन करती थी ।

शेखाजी जहां वीर, साहसी एवं पराक्रमी योद्धा थे, वहीं धार्मिक सहिष्णुता के पुजारी भी थे। उन्होंने 1200 पन्नी पठानों को आजीविका के लिए जागीर दी एवं उन्हें भारत में सर्वप्रथम अपनी सेना में भर्ती कर धर्मनिरपेक्षता का परिचय दिया। उनके राज्य में सूअर का शिकार एवं खाने पर पाबंदी थी, जो वहीं पठानों के लिए गाय, मोर आदि मारने तथा खाना अवैध था।

पठान सैन्य दल शेखाजी की सेना का एक महत्वपूर्ण अंग था । यह पूर्व प्रशिक्षित दल ने उनके सामरिक उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक रहा। उनकी राजनीतिक परिस्थितियां प्रतिकूल थी। उपयुक्त सेना तैयार करने में काफी समय लग सकता था । वि.स. 1525 से वि.स. 1468 तक का शासन काल में उनका संकटग्रस्त समय रहा था । वि.स. 1524 में आमेर राजगद्दी पर चन्द्रसेन के आने से राजनीतिक समीकरण बदल गये थे। ऐसे समय में शेखाजी और बरवाड़ा दोनो का अस्तित्व खतरे में था । ऐसी विकट स्थिति में पठानों को अपनी सेना में शामिल कर अपनी राजनीतिक एवं धार्मिक सहिष्णुता का परिचय दिया । अमरसर के प्रतापी शासकों ने दो पुश्तों तक राजपूतों और पठानों की सेनाओं का संयुक्त संचालन करके अपनी अद्वितीय सैनिक प्रतिभा का परिचय दिया है। बादशाह शेरशाह सूरी का पिता हसनखां ने अपना प्रारम्भिक जीवन अमरसर में बिताया था। मेड़ता से निष्कासित राजा वीरमदेव को अमरसर की पावन धरा ने ही आश्रय प्रदान किया था।

अमरसर की यह भूमि अपने उत्कर्ष काल में युद्धों और शाकों की भूमि रही है। तलवार की धार पर कटने वाले वीरों और आग की लपेटों में अपनी देह को होमने वाली विरांगनाओं की इस पावन धरा की बहुसंख्यक समाधियां, छतरियां और देवलियां आज भी साक्षी हैं।

शिखरगढ़ का निर्माण-

अमरसर बसाने के बाद शेखाजी ने पहाड़ों से सुरक्षित एक सुदृढ़ दुर्ग बनाने का निश्चय किया। अमरसर से पूर्व में कुछ मील दूरी पर जगदीश पर्वतमाला के पश्चिम ढ़ाल की उपत्यका को उन्होंने इसके लिए चुना । वह स्थान तीन तरफ से पहाड़ी चोटियों की प्राकृतिक प्राचीर से घिरा हुआ था। घाटी का एक पश्चिम भाग केवल खुला हुआ था। शेखाजी ने उस खुले भाग को विशाल ऊंची दिवार बनवाकर बन्द करवाया तथा उसमें प्रवेश के लिए एक मजबूत विशाल दरवाजा लगवाया। उस प्राकुतिक दूर्ग का नाम उन्होंने 'शिखरगढ़' रखा। शिखरगढ़ के ऊपर पहाड़ी पर दुर्गा माता का मन्दिर बना हुआ है तथा उसमें एक कुआ खुदा हुआ है। इसी पर्वत के सर्वोच्च शिखर पर श्री जगदीशजी का प्राचीन मन्दिर बना हुआ है। इसी मन्दिर के नाम पर इस पर्वत श्रृंखला का नाम जगदीश पर्वतमाला पड़ा है।

शिखरगढ़ के निर्माण से सुल्तान बहलोल अप्रसन्न हुआ और उसने शिखरगढ़ तोड़ने के लिए अपनी सेना भेजी। काफी दिनों तक बहलोल की सेना शिखरगढ़ को घेरकर मोर्चा बांधे जमी रही, लेकिन अन्त में गढ़ जीते बिना ही सेना को वापिस लोटना पड़ा।'

कछवाहा राजवंश की प्रमुख शाखा शेखावत रही हैं। इसमें समय-समय अच्छे वीर, योद्धा, कुशल प्रशासक, विद्धान् और शिक्षाप्रेमी महापुरुष होते आये हैं, जो जयपुर के राजाओं के साथ कधें से कंधा मिलाकर रणभूमि में उनको विजय दिलाते रहे हैं।

उपसंहार-

राव शेखा का जन्म नाण के शासक मोकल कछवाहा की राणी निरवाण से औज सुदी विजयादशमी, वि.सं. 1490 तदनुसार 24 सितम्बर, 1433 को हुआ था। शिखर वंशोत्पति में शेखा का जन्म स्थान 'बरवाड़ा' माना है। मुस्लिम सन्त शेख बुरहान चिस्ती की दुआ से इनका जन्म हुआ, इसलिए राव मोकलजी ने अपने पुत्र का नाम शेखा रखा। 12 वर्ष की छोटी आयु में इनके पिता का स्वर्गवास होने के उपरान्त राव शेखाजी वि.स. 1502 में बरवाड़ा एवं नाण के 24 गांवों की जागीर के उत्तराधिकारी बने। उन्होंने अपने पुरुषार्थ के बल पर पैत्रिक राज्य आमेर के बराबर 360 गांवों पर अधिकार कर एक नए स्वतंत्र कछवाहा राज्य की स्थापना की तथा शेखावाटी साम्राज्य की नींव रखी।

शेखाजी के पश्चात् उनके वंशजों ने त्याग और बलिदान के द्वारा शेखावत वंश की ख्याति को सर्वत्र प्रसारित किया। नारी मान-मर्यादा के रक्षक और साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतिक महाराव शेखाजी का नाम इतिहास में अग्रणी रहा है ।

यह शेखावत शाखा राजा और राज्य की परम सहायक और संरक्षिका रही है। साथ ही इसके विविध संस्थानों के अधिपति अपनी सामर्थ्यानुसार लोक जीवन को समुन्न बनाने में भी योग देते रहे हैं। इस शोध पत्र में महाराव शेखाजी के जीवन चरित्र एवं कछवाह वंश के साथ शेखावत वंश और राज्यों, जागीरों की जानकारी संजोने का प्रशंसनीय कार्य किया है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. कालीपहाड़ी, रघुनाथ सिंह शेखावत और उनका समय, ठा. मल्लूसिंह स्मृति ग्रन्थागार, झुन्झुनू, पृ.सं. 26
2. वही, पृ.सं. 51
3. शिखर वंशोत्पति पीढ़ी वार्तिक, पृ.सं. 3
4. शेखावत, सुरजनसिंह - राव शेखा, आयुवान सिंह स्मृति संस्थान, जयपुर, 1973, पृ.सं. 63
5. वही, पृ. स. 106
6. शेखावत, शार्दूल सिंह शेखावत और उनका समय, काली पहाड़ीः मल्लू सिंह
7. काली पहाड़ी, रघुनाथसिंह पृ. स. 37 - स्मृति ग्रंथागार, 1998, पृ.स.2
8. आर्य, हरफूल सिंह शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान, पंचशील प्रकाशन, जयपुर 1987, पृ. 56